श्री 1008 सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन

*** श्री 1008 चंदप्रभ जिनालय, विदिशा में दिनांक 15 से 23 मार्च तक अष्टानिहका महापर्व पर 105 विभामति माताजी एवं विनयश्री माताजी के सानिध्य में प्रतिष्ठाचार्य पं. महेन्द्र जैन (बिस्किट) के कुशल निर्देशन में एवं अहमेन्द्र जैन गंजबासौदा के मधुर स्वरों के साथ श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान का सफलतापूर्वक आयोजन हुआ। इसमें श्री अशोक कुमार जैन सौधर्म इन्द्र, श्री सुरेन्द्रकुमार कुबेर, अरविन्द कुमार दिवाकिर्ती इशान इंद्र, श्री संतोष कुमार शुक्रइंद्र , श्री अरविन्द कुमार जैन पी.पी. लांतेन्द्र, श्री कन्छेदीलाल राजा चक्रवर्ती एवं श्री संतोष कुमार जैन एस.ए.टी.आई. महा यज्ञनायक एवं श्री किशनचंद्र जैन यज्ञनायक, रमेश कुमार गुलगांव ने महेन्द्र के रुप में अंनतानंत सिद्धों की आराधना की । कार्यक्रम का ध्वजारोहण श्री ए.एल.फणीश द्वारा किया गया ।

*** दिनांक 10 से 19 अप्रैल तक नव श्रृंगारित मंदिर 1008 श्री महावीर जिनालय, किरी मोहल्ला, विदिशा में महावीर जयंती की पूर्व बेला में अनुमति त्याग प्रतिमाधारी बा. ब्र. श्रद्धेय श्री अशोक भैयाजी एवं पं. महेन्द्र कुमारजी के कुशल निर्देशन में श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान का अयोजन श्री हुकमचंद, श्री बाबूलाल, श्री दुलीचंद, श्री संतोष कुमार झावरवाले परिवार द्वारा किया गया । इस कार्यक्रम में गंजबासौदा की संगीत पार्टी भैया, अहमेन्द्र के मुखारबिंद से धर्मगंगा प्रवाहित हुई, जिसका उपस्थित समाजजनों ने पूर्ण मनोयोग से आनंद लिया ।

*** विधान श्रंखला को आगे बढ़ाते हुये दिनांक 1 से 9 मई तक किले अंदर जैन बड़ा मंदिर विदिशा में प्रतिष्ठाचार्य पं. महेन्द्रकुमार के कुशल निर्देशन में एवं 105 आर्यिका विभामति माताजी एवं विनयश्री माता जी के सानिध्य में अनंतानंत सिद्धों की आराधना श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन होगा ।

*** विशाल जैन पवा। तालबेहट। वीर बुन्देलखण्ड के प्रसिद्ध सिद्ध क्षेत्र पावागिरि जी की पावन धरा पर 28 फरवरी को आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज का आचार्य पदारोहण दिवस एवं अष्टान्हिका महापर्व में 16 मार्च से 23 मार्च तक राष्ट्रसंत आचार्य प्रवर विद्यासागर जी महाराज के मंगलमय आशीर्वाद से आर्यिकारत्न पूर्णमति माताजी के ससंघ सानिध्य में श्री 1008 अष्टमण्डलीय सिद्धचक्र महामण्डल विधान, हवन एवं विश्वशान्ति महायज्ञ का आयोजन किया गया। आर्यिका 105 पूर्णमति माता जी के साथ आर्यिका शुभ्रमति, साधुमति, विशदमति, विपुलमति, मधुरमति, वात्सल्यमति एवं सतर्कमति माताजी के शुभाशीष एवं बाल बह्मचारी अनिल भैया, भोपाल के निर्देशन में प्रतिदिन अतिशय युक्त चमत्कारी बाबा मूलनायक भगवान पारसनाथ स्वामी का मस्तष्काभिषेक–शान्तिधारा, मंगल आरती एवं पूजन–विधान की क्रियाएं की गयी। ऐतिहासिक सिद्धचक्र महामण्डल विधान में श्रीमति सुशीला पाटनी आर.के.मार्बल किशनगढ़ ने आर्यिका माताजी को शास्त्र भेंट एवं ध्वजारोहण नेमीचन्द्र आगरा ने किया। संजय जैन एण्ड पार्टी के मधुर संगीत में सैकड़ों इन्द्र–इन्द्राणियों ने सिद्धों की आराधना करते हुए आत्म कल्याण की भावना के साथ कर्मों की निर्जरा के लिए अर्घों की आहूतिया दी। इस अवसर पर आर्यिका पूर्णमति माताजी ने कहा कि 'जिन के निकट आने से ही तुम निज' के समीप आओंगे, धार्मिक अनुष्ठानों से भावों की विशुद्धि बढ़ती है एवं भावों के परिणाम ही आत्म कल्याण में सहायक हैं। उन्होंने कहा कि हमें सत्य को स्वीकारते हुए समता भाव धारण करना चाहिए क्योंकि भावों के परिणाम बिगड़ने से हमारा जीवन बिगड़ जायेगा। इन्टरनेट और सैटेलाइट के जमाने में तुम घर बैठे संसार को देख सकते हो लेकिन कभी भी अपनी आत्मा को नहीं देख सकते, उसके लिए तो अपने ज्ञान चक्षुओं को ही खोलना होगा। आर्यिका माताजी ने श्रीपाल–मैना सुन्दरी चारित्र पर प्रकाश डाला एवं सिद्धचक्र विधान की महिमा का गुणगान किया। द्विगुण–द्विगुण विधान में 1024 अर्घों की पूर्णाहूति के उपरांत अन्तिम दिन हवन, विश्वशान्ति महायज्ञ के बाद रथ यात्रा का आयोजन किया गया जिसमें भारी भीड़ उमड़ पड़ी, जन सैलाब से प्रांगण में वार्षिक मेला जैसा माहौल बन गया।

*** बुन्देलखण्ड के प्रसिद्ध सिद्ध क्षेत्र पावागिरि जी में 1 से 8 अप्रैल तक आयोजित श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान में धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए आर्यिका पूर्णमति माताजी ने कहा कि आत्म स्वरुप को प्रगटाने एवं आत्मा को परमात्मा बनाने के लिए आज का मानव पुरुषार्थ कर रहा है, लेकिन सफल नहीं हो रहा है क्योंकि वह बाहरी आडम्बरों में लगा हुआ है जबकि प्रभु की सम्यक्त्व भक्ति ही मोक्ष मार्ग एवं मुक्ति का साधन है। उन्होंने कहा कि मानव का स्वभाव निर्विकल्प है लेकिन विकृत परिणाम के कारण वह जल्दी ही टेन्शन में आ जाता है जिससे अनन्त संसार में भटकना पड़ता है। माता जी ने कहा कि हमारी भावनाओं में कभी दरिद्रता नहीं होना चाहिए, हम अपने सुख–दुःख के लिए स्वयं जिम्मेदार हैं, निज को साफ, पर को माफ और रब को याद करने में ही हमारा कल्याण है। इस विधान का आयोजन मुनि श्री सुव्रत सागर जी महाराज एवं आर्यिका संघ के मंगलमय सानिध्य एवं अनुमति त्याग प्रतिमाधारी ब्रह्मचारी अशोक भैया इन्दौर के निर्देशन में दीपचन्द्र महेन्द्र कुमार जैन गुडारे परिवार 'गोर' विदिशा की ओर से किया गया। इस अवसर पर मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज ने कहा कि जिन शासन में निमित्त और उपादान से सभी व्यवस्थाएं चलती हैं, निमित्त के बिना कभी भाग्य फलीभूत नहीं होता। उन्होंने कहा कि भला–लाभ और याद–दया ऐसे संयोग हैं कि दूसरों का भला चाहने से खुद का लाभ हो जायेगा और परमात्मा को याद करोगे तो वह निश्चित ही दया कर देगा। विधान में गोर परिवार के समस्त रिश्तेदारों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया । संचालन ज्ञानचन्द्र पुरा एवं आभार व्यक्त प्रवीण जैन 'दैनिक विश्व परिवार', झांसी ने किया।

मातृत्व विशेष पर....

सोशल मीडिया की नजर से.... एक विवाहित बेटी का पत्र उसकी माँ के नाम

''माँ तुम बहुत याद आती हो''
अब मेरी सुबह 6 बजे होती है और रात 12 बज जाती है, तक
''माँ तुम बहुत याद आती हो''
सबको गरम गरम परोसती हूँ, और खुद ठंडा ही खा लेती हूँ, तब
''माँ तुम बहुत याद आती हो''
जब कोई बीमार पड़ता है तो
एक पैर पर उसकी सेवा में लग जाती हूँ,
और जब मैं बीमार पड़ती हूँ
तो खुद ही अपनी सेवा कर लेती हूँ, तब
''माँ तुम बहुत याद आती हो''
जब रात में सब सोते हैं,
बच्चों और पति को चादर ओढ़ना नहीं भूलती,
और खुद को कोई चादर ओढ़ने वाला नहीं, तब
''माँ तुम बहुत याद आती हो''
सबकी जरुरत पूरी करते करते खुद को भूल जाती हूँ,
खुद से मिलने वाला कोई नहीं, तब
''माँ तुम बहुत याद आती हो''
यही कहानी हर लड़की की शायद शादी के बाद हो जाती है
कहने को तो हर आदमी शादी से पहले कहता है
''माँ की याद तुम्हें आने न दूँगा''
पर, फिर भी क्यों ?
''माँ तुम बहुत
याद आती हो''

* विनम्र श्रद्धांजली *

श्रीमति गजराबाई धर्मपत्नी स्व. श्री कैलाशचंद, दुमदुमा का निधन 8 मार्च हो गया उनका जन्म बरधुवाँ में हुआ । दैवदुर्विपाक से शादी के एक वर्ष बाद ही उन्हें वैधव्य का दुःख देखना पड़ा । जैन धर्म में गहन आस्था श्रद्धा भक्ति के साथ ही वे इस दुःख को समताभाव के साथ स्वयं तथा अपने परिवार को सम्हालकर जीवन की एक मिसाल कायम की ।

श्री राहुल रमेशचंद जैन का 40 वर्ष की अल्पायु में आकस्मिक निधन 18 अप्रैल को इन्दौर में हो गया है । आप मिलनसार एवं धार्मिक प्रवृत्ति के युवा थे ।

श्री संतोषकुमार जैन का निधन 29 मार्च को अल्प बीमारी के बाद इन्दौर में निधन हो गया। आप स्व. श्री श्यामलाल चौमोवाले के ज्येष्ठ पुत्र थे ।

दिवंगत समाजजनों को गोलालारीय दर्शन परिवार अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

नोट – शोक संदेश पूर्ण जानकारी (सचित्र) के साथ भेजने पर ही प्रकाशन संभव हो पायेगा । संदेश वाट्सएप्प पर ना भेजें ।– संपादक मंडल